डर नहीं लगता

अब अंदर झांकने में डर नहीं लगता
दिल का सिक्का आंकने में डर नहीं लगता
लगता था किसी दफा खौफ बंजारों से
अब खुद मनचले हैं लो यारों!
अब डर नहीं लगता।

जिंदगी के इसी सफर में अब सदियों काटने में डर नहीं लगता
अब अंबर की चादर की आदत है सर पर
अब चांद सितारों से डर नहीं लगता।

कभी तलाशते थे हम हर रोशन कोना
अब शाम के संसारों से डर नहीं लगता।

कुछ लफ्ज़ आवारों से डर नहीं लगता
कुछ मुहल्लों चौबारों से डर नहीं लगता।

डरते थे कभी किसी नजर की वह मुँहजोरी से
किसी की ताने से, इज्जत की चोरी से
पर अब इन अंगारों से डर नहीं लगता
अब भरे बाजारों से डर नहीं लगता।

खात भी लिखे कुछ जिंदगी की शायरी के
कुछ सुने-अनसुने ख्वाब रह गए
कांटो के जहन्नुम बनकर
वो फूलों के ख्वाब रह गए
अब गुलजारों से डर नहीं लगता।

फूलों की बहारों से डर नहीं लगता
लगता था कभी जीने से ही डर
अल्लाह रहम की हमें मौत मिल गई
अब जिंदगी की हारों से डर नहीं लगता
अब सांसों के व्यापारों से डर नहीं लगता।

अब इन रगों के कांपने में डर नहीं लगता
अब अंदर झांकने में डर नहीं लगता।

जोयस सेली
बी.ए. (ऑनर्स)-प्रथम वर्ष
जर्मन अध्ययन केन्द्र,
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय।